संपूर्ण भारत के लिए एक प्रकाशन

RNI Reg.No.-CHHHIN/2004/15050
Postal Reg.No.-13/Surguja DN/2023-2025

दैनिक घटती घटना

Www.ghatatighatana.com

Ghatatighatana11@gmail.com

अम्बिकापुर,वर्ष 20,अंक-281 रविवार,11 अगस्त 2024, पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये

छत्तीसगढ़ सरकार घर तोड़िए या कार्यालय तोड़िए...इंकलाब होता रहेगा इंसाफ तक...अब तो बताईए मुख्यमंत्री जी...क्या छापें?

कलम बंद...का ब्यालीसवां दिन

- » छत्तीसगढ़ की विष्णुदेव साय सरकार क्या गैर संवेदनशील सरकार है...?
- » सरकार को कमियां ना दिखाएं तो क्या दिखाएं...?
- » क्या विष्णुदेव साय सरकार बेहतर चल रही है...सिर्फ यह बात आईएएस लॉबी को पता है...आम जनता को नहीं है जानकारी...?
- » किसी का दिव्यांग प्रमाण-पत्र फर्जी वह करता है मंत्री के घर मनमर्जी,दिव्यांग मांग रहे अधिकार क्या उन्हे दोगे न्याय प्रदेश के कर्णधार?
- » क्या फर्जी दिव्यांग और फर्जी डिग्री के आधार पर जो कर रहे नौकरी उन्हे होगी जेल...उन्हें मिल सकेगा संकल्प पत्र अनुसार दण्ड...?

क्या प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री के लिए पूरे प्रदेश के लोगों से ऊपर उनके भतीजे हैं?

स्वास्थ्य मंत्री ने पत्रकारों को संरक्षण देने की बात कही...वहीं दूसरी तरफ भ्रष्टाचार पर जनसंपर्क अधिकारी को आगे कर समाचार-पत्र पर दबाव बनाने का कर रहे वह काम...ये कैसा संरक्षण?
कैसे पत्रकारों को मिलेगी सुरक्षा...कैसे समाचार-पत्र रह सकेंगे निष्पक्ष...जब उन्हे सच लिखने पर मिलेगी सजा?

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी?

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल महामहिम श्री रेमन डेका से हस्तक्षेप की मांग...
क्या छापें आयुक्त सहसंचालक आईपीएस मयंक श्रीवास्तव साहब?
स्पष्ट कीजिए माननीय प्रधानमंत्री जी,स्पष्ट कीजिए माननीय मुख्यमंत्री जी छत्तीसगढ़ शासन,स्पष्ट कीजिए माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी छत्तीसगढ़ शासन...
गृहमंत्री जी,भारत सरकार क्या छत्तीसगढ़ में भ्रष्टाचार को लेकर खबर प्रकाशन पर होगी समाचार पत्र पर कार्यवाही ?

तुगलकी फरमान के विरूद्ध कलमबंद अभियान...

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के विभाग जनसंपर्क के द्वारा स्वास्थ्य मंत्री श्री श्यामबिहारी जायसवाल के विभाग से संबंधित समाचारों के प्रकाशन पर जनसंपर्क संचालनालय के आयुक्त सह संचालक आईपीएस श्री मयंक श्रीवास्तव के मौखिक आदेश पर घटती-घटना के शासकीय विज्ञापन पर रोक लगाकर दबाव बनाने से लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के मूलभूत हक पर कुठाराघात के विरूद्ध कलमबंद अभियान...?

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

खुला पत्र

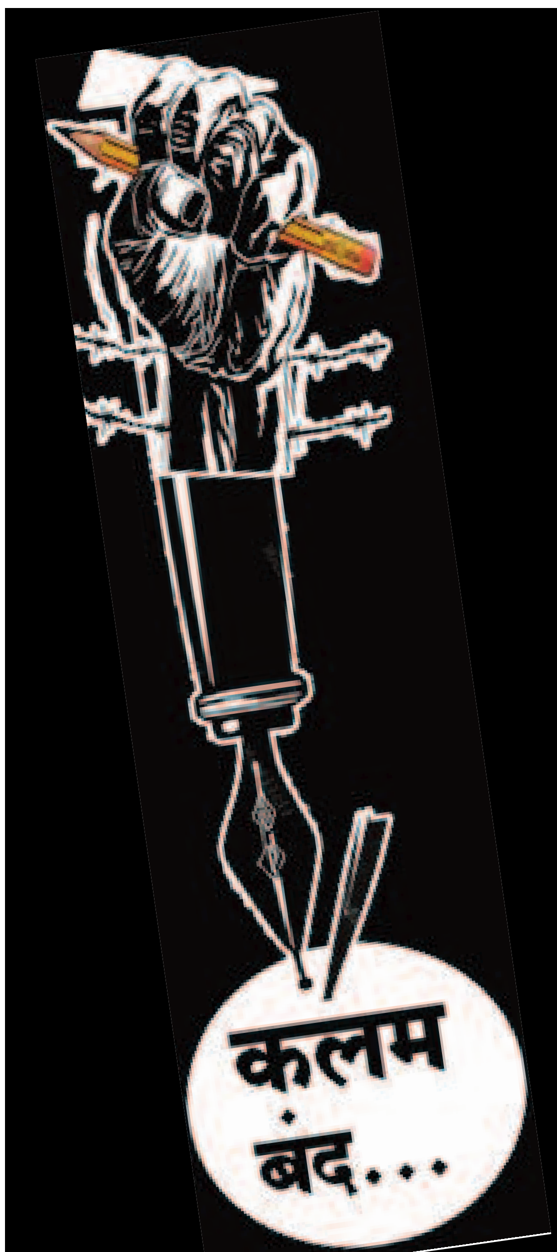

-फाईल फोटो-

कलम बंद...का चालीसवां दिन

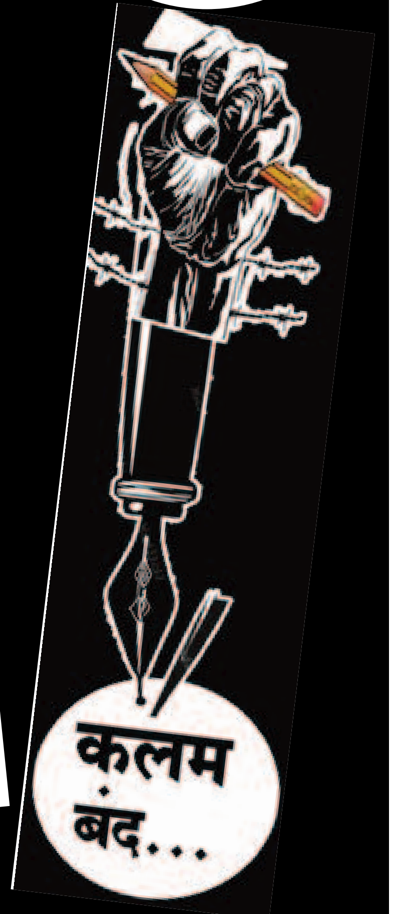

आखिर कलम बंद करने के लिए एक अखबार को किसने किया मजबूर...

-रवि सिंह-

रायपुर/अंबिकापुर,10 अगस्त 2024 (घटती-घटना)। छत्तीसगढ़ के सरगुजा संभाग के दैनिक घटती-घटना अखबार को आखिरकार कलम बंद क्यों करना पड़ा..? यह सवाल सभी के जेहन में आ रहा होगा, तो हम आपको बताना चाहेंगे कि दैनिक घटती-घटना अखबार सदैव ही लोगों के लिए सच्ची खबर प्रकाशित करने का काम करता है...सरकार किसी की भी हो...उन्हें कमियां दिखाने का काम करता रहा है... पिछली सरकार में भी सच लिखने का काम दैनिक घटती-घटना ने किया था, उस समय भी परेशानियों का सामना संपादक सहित पत्रकारों को अखबार को करना पड़ा था, लेकिन उस समय परेशानियों का सामना मुकदमों से करना पड़ा था। कई मामले कानूनी दर्ज होने के तौर पर करना पड़ा था। वहीं इस बार आर्थिक क्षति के तौर पर अखबार के संपादक को नुकसान झेलना पड़ा है । भारत के लोकतंत्र में चौथा स्थान पत्रकारिता का आता है जिसे निष्पक्षता के साथ करना अत्यंत जरूरी है, ताकि देश में संतुलन बना रहे । जो काम दैनिकघटती-घटना बखूबी करता भी है, सत्ता परिवर्तन हुआ और नई सत्ता आई पर कमियों को दैनिक घटती-घटना ने प्रकाशित करना शुरू किया,जब पुरानी सरकार की कमियों को प्रकाशित किया गया था तब जनता ने नई सरकार चुनने का फैसला लिया और जब आज नई सरकार जनता के हित के लिए चुनी गई तो आज यह सरकार भी जनता के हित के लिए काम नहीं कर रही है। जिन कमियों को दिखाने का काम एक बार फिर दैनिक घटती-घटना ने शुरू किया, प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री जो दैनिक घटती-घटना की खबरों की ही देन है उनसे जुड़ी कमियों को अखबार ने जब दिखाना शुरू किया तो उन्हें यह बात रास नहीं आई और उन्होंने अपनी कमियां दूर करने के बजाय दैनिक घटती-घटना को दबाने के लिए उन्हें आर्थिक नुकसान पहुंचाने के लिए शासकीय विज्ञापन पर रोक लगाया जिसका निर्देश उन्होंने मौखिक दिया गया जो न्यायोचित नहीं था और जो शासन की योजनाएं थी उस विज्ञापन को रोका गया जो पैसा भी शासन का था ना कि किसी मंत्री या अधिकारी के घर का, विज्ञापन रोकने में भी इतनी तत्परता दिखाई गई की नियमों को भी दरकिनार किया गया, इसके बाद भी दैनिक घटती-घटना कमियों की खबर प्रकाशित करता रहा,और लोकतंत्र को दबाया ना जाए इसके लिए दैनिक घटती-घटना ने 1 जुलाई से कलम बंद अभियान की शुरुआत की ताकि लोकतंत्र का चौथा स्तंभ हमेशा ही स्वतंत्रता के साथ काम कर सके। दैनिकघटती-घटना अखबार इस अभियान को सिर्फ अपने लिए शुरू नहीं किया लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को बचाने के लिए इस अभियान को शुरू किया...ताकि जहां पर प्रेस ऑफ फ्रीडम का स्थान भारत में 169 वां है जो काफी शर्मनाक है और इस और देश के सर्वोच्च न्यायालय व देश के प्रधानमंत्री को सोचना चाहिए,और यह भी सोचना चाहिए कि जिस देश में प्रेस ऑफ फ्रीडम की स्थिति अच्छी है वहां पर उस देश की भी स्थिति अच्छी है। लोकतंत्र पर दबाव बनाने के लिए प्रदेश के अखबार के प्रतिष्ठान पर कार्यवाही सहित शासकीय विज्ञापन की रोक कहीं ना कहीं लोकतंत्र को कुचलना भी लोगों की आवाज को दबाने का ही प्रयास जैसा है,दैनिक घटती -घटना के कलमबंद अभियान के तहत प्रदेश के मुख्यमंत्री स्वास्थ्य मंत्री और संयुक्त संचालनालय जनसंपर्क के उपसंचालक मयंक श्रीवास्तव से शासकीय विज्ञापन बंद करने को लेकर सवाल पूछा कि आखिर क्या छापें जिससे आपको बुरा ना लगे पर यह बात भी सरकार को नागवार गुजरी और सरकार ने और बड़ा कदम उठाया ताकि लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कुचला जा सके। कलमबंद अभियान के तहत 28 दिनों से प्रदेश के जिम्मेदार व प्रदेश की बेहतरी के लिए जिनके हाथों में कमान है उनसे सवाल किया गया पर वह सवाल को भी बर्दाश्त नहीं कर पाए और 28 में दिन दैनिक घटती-घटना के संस्थान पर बुलडोजर चलवा दिया,बुलडोजर चलवाना भले ही लोकतंत्र को कुचलने के लिए आसान लगा हो पर बुलडोजर चलने की आवाज भी पूरे देश में गूंज गई पूरे देश में छत्तीसगढ़ सरकार की तानाशाही दिख गई लोकतंत्र की हत्या करने का प्रयास दिख गया,पर नहीं दिख सकी तो सरकार की संवेदना सरकार ने यह बता दिया कि उनके अंदर संवेदना बिल्कुल नहीं है क्योंकि जिस समय कार्यवाही की गई वह समय संपादक के घर पर शोक का था पर शोक के समय में सरकार ने कार्यवाही करके हिंदूवादी पार्टी होने के दावे को भी झुठला दिया। अखबार जो कमियों को दिखा रहा था वह कमी वाकई में सरकार की छवि को खराब कर रही थी सरकार अखबार की खबरों पर संज्ञान लेकर अपनी छवि को बेहतर कर सकती थी उनके मंत्री अपनी छवि को बेहतर कर सकते थे पर अपनी छवि बेहतर करने के बजाय अपनी छवि को और खराब करने का सरकार का प्रयास सरकार के लिए ही गले की फांस बन गई। जो स्वास्थ्य मंत्री का विपक्ष में रहते हुए बड़ा नाम था वहीं स्वास्थ्य मंत्री को सत्ता मिलते ही उस नाम को सरे बाजार नीलाम कर लिया और वह भी सिर्फ अपने विवादित कर्मचारी की वजह से यहां तक की संघ को भी उन्होंने नहीं छोड़ा। इस लेख के माध्यम से हम यह भी जानना चाहेंगे की क्या कलम बंद अभियान चलाकर एक अखबार ने गलत किया या फिर पूरे देश के लोकतंत्र को बचाने का प्रयास किया इस पर आपकी क्या राय है यह भी जरूर दें।

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

खुला पत्र

भ्रष्ट सूरमाओं की लग रही थी खबर जो नहीं कर पाए बर्दाश्त... ऐसे बौखलाए कि गिराने पहुंचे संस्थान...फिर भी खबर का प्रकाशन जारी...अब जान लेने की है बारी...?

» सत्ता के नशे में भ्रष्ट सुरमा...अपने आप को काफी शक्तिशाली समझ बैठे... और वह किया जिसकी प्रदेश में कल्पना भी नहीं की जा सकती थी...

» भ्रष्ट सूरमाओं को नहीं आई शर्म...इतने बड़े निकले बेशर्म...कि शोक की बेला का भी नहीं रखा उन्होंने ध्यान...

-रवि सिंह-

रायपुर/अंबिकापुर, 10 अगस्त 2024 (घटती-घटना)। भ्रष्ट सूरमा किसे कहा जाता है,इसकी संज्ञा की व्याख्या करना उतना जरुरी नहीं है, क्योंकि लगभग लोग इस वाक्य को समझ सकते हैं इसका अर्थ निकाल सकते हैं। भ्रष्ट सूरमाओं की बात इसलिए हो रही है...क्योंकि भ्रष्ट सूरमाओं को मिल गया है सत्ता...और सत्ता में मिल गया है कैबिनेट...और कैबिनेट मिलने वाले के तंत्र भी है भ्रष्ट सूरमा...। जब भ्रष्ट सूरमाओं की खबर लगती है... तो यह अपने आप को सत्ता की ताकत में बहुत ताकतवर समझ बैठते हैं...और यह समझ बैठे हैं कि उनसे बड़ा ताकतवर तो कोई नहीं है...उन्हें कोई भी हरा नहीं सकता... उन्हें कोई भी झुका नहीं सकता...उस समय इनका घमंड रावण के घमंड से भी ऊपर होता है। पर शायद यह भूल जाते हैं कि जब रावण का घमंड टूट सकता है...तो फिर सत्ता के नशे में चूर भ्रष्ट सूरमाओं का क्या होगा... प्रदेश के एक संभाग में लोकतंत्र को कुचलने के लिए भ्रष्ट सूरमाओं का किया गया प्रयास कहीं ना कहीं उन्हीं के गले की फांस बन गया है। जनता के सामने बेनकाब हो गए हैं। वह अपनी ताकत का परिचय उन्होंने तब दिया...जब सामने वाला व्यक्ति घायल अवस्था में था... और उसके बाद इतने खुश हैं कि उन्होंने कितनी बड़ी जंग जीत ली है...। वह भी लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को कुचलकर उसके मुंह को दबाकर इसके बाद भी कलम नहीं रोक पा रहें हैं...तो अब क्या जान लोगे...? अपनी पूरी ताकत दिखाने के बाद भी अपनी खबरों को अपनी कमियों को छापने से नहीं बचा पा रहे...पूरे प्रदेश की किरकिरी हो रही फिर भी आडंबर जारी है।

बताना जरूरी है की प्रदेश के स्वास्थ्य विभाग और स्वास्थ्य मंत्री के भतीजे प्रभारी डीपीएम सूरजपुर साथ ही उनके ओएसडी को लेकर सरगुजा अंचल का दैनिक घटती -घटना समाचार-पत्र लगातार समाचार प्रकाशित कर रहा था जिसका तथ्य यह था की प्रभारी डीपीएम सूरजपुर की डिग्री फर्जी है जिसका आरोप एक व्यक्ति ने लगाया है और उनकी बर्खास्तगी की वह मांग कर रहा है। कानूनी दंड वह उसके विरुद्ध चाहता है । कोरिया जिले में रहते हुए भी प्रभारी डीपीएम स्वास्थ्य मंत्री के भतीजे के विरुद्ध भ्रष्टाचार के आरोप थे वहीं स्वास्थ्य मंत्री के ओएसडी की नौकरी भी फर्जी दिव्यांग प्रमाण-पत्र के आधार पर लगी है और जिसकी शिकायत दिव्यांग संघ नामजद कर रहा है कि किस तरह राज्य प्रशासनिक सेवा का अधिकारी संजय मरकाम जो फिलहाल स्वास्थ्य मंत्री का ओएसडी है वह शासकीय सेवक एक अधिकारी बतौर सेवा प्रदान कर रहा है। वहीं स्वास्थ्य मंत्री के कार्यकाल में किस तरह स्वास्थ्य सुविधाओं का प्रदेश में बुरा हाल है और स्वास्थ्य व्यवस्था प्रदेश की चरमरा गई है और इन्हीं खबरों से स्वास्थ्य मंत्री आहत हो गए और उन्होंने दैनिक घटती-घटना समाचार-पत्र का पहले शासकीय विज्ञापन बंद कराया और बाद में शासन स्तर से एक कानून लाकर वहीं जिला प्रशासन सरगुजा को आगे करके दैनिक घटती-घटना कार्यालय और संपादक के प्रतिष्ठान को जमींदोज करा दिया। वहीं जब इसके बाद भी समाचार-पत्र का विरोध बंद नहीं हुआ और सत्य का प्रकाशन जारी रहा। यह कयास लगाए जा रहे हैं कि अब कोई व्यक्तिगत शारीरिक क्षति संपादक या संवाददाता को पहुंचाई जा सकती है जिसकी संभावना अब प्रबल है। वैसे दैनिक घटती-घटना का सत्य प्रकाशन का अभियान जारी है और वह इसे जारी भी रखने वाली है भले ही अब परिणाम जो सामने आए।

वैसे जिस प्रदेश सरकार खासकर सरकार के स्वास्थ्य मंत्री ने खबरों से आहत होकर समाचार-पत्र को ही नेस्तनाबूत करने का फैसला तत्काल ले लिया वहीं स्वास्थ्य मंत्री और वही प्रदेश सरकार उन भ्रष्ट दो लोगों पर कार्यवाही नहीं कर पा रही है जिनकी यदि आज जांच की जाए तो वह पहले नौकरी से जायेंगे वहीं वह जेल भी जायेंगे क्योंकि उनका कृत्य ही कूट रचना कर नौकरी पाने का है इनमें से एक खुद स्वास्थ्य मंत्री का भतीजा है जिसकी डिग्री फर्जी होने का दावा साथ ही लिखित मय सबूत शिकायत की जा चुकी है वहीं उनके ही ओएसडी जो फर्जी दिव्यांग प्रमाण-पत्र के आधार पर राज्य प्रशासनिक सेवा का अधिकारी है। वैसे यदि इन दो लोगों पर कठोर कार्यवाही करने उपरांत प्रदेश सरकार दैनिक घटती-घटना कार्यालय पर संपादक पर कार्यवाही करती समझ में आता की सरकार सुशासन वाली है और वह न्याय की पक्षधर है भ्रष्टाचार के खिलाफ है लेकिन सरकार ने भ्रष्टाचारियों फर्जी डिग्री धारियों को बचाने के लिए समाचार-पत्र पर ही कार्यवाही कर दी जिससे उसकी मंशा समाने आ गई है कि वह अब भ्रष्टाचार के साथ आगे बढ़ने वाली है। वैसे वर्तमान सरकार इस घोषणा के साथ सत्ता प्राप्त कर सकी है कि वह भ्रष्टाचार की जांच करेगी 100 दिवस में कार्यवाही करेगी। वहीं यह सरकार फर्जी नियुक्तियों को लेकर भी जांच करेगी और कठोर कार्यवाही दंडात्मक करेगी लेकिन दो मामलों में सरकार जब सत्य प्रकाशित करने वाले समाचार-पत्र के खिलाफ ही कार्यवाही करने उतारू हो गई तब समझा जा सकता है कि सरकार की मंशा क्या है वह भ्रष्ट तरीके से नौकरी पाने वालों के ही पक्ष में है उनके साथ है जिनमे एक स्वास्थ्य मंत्री का भतीजा है एक उनका ओएसडी। अब यह समझा जा सकता है की प्रदेश में अब बेरोजगार रोजगार पाए न पाए योग्य व्यक्ति नौकरी पाए न पाए वर्तमान सरकार में लेकिन फर्जी डिग्री वालों के साथ है सरकार फर्जी दिव्यांग प्रमाण-पत्र वालो के साथ है सरकार।

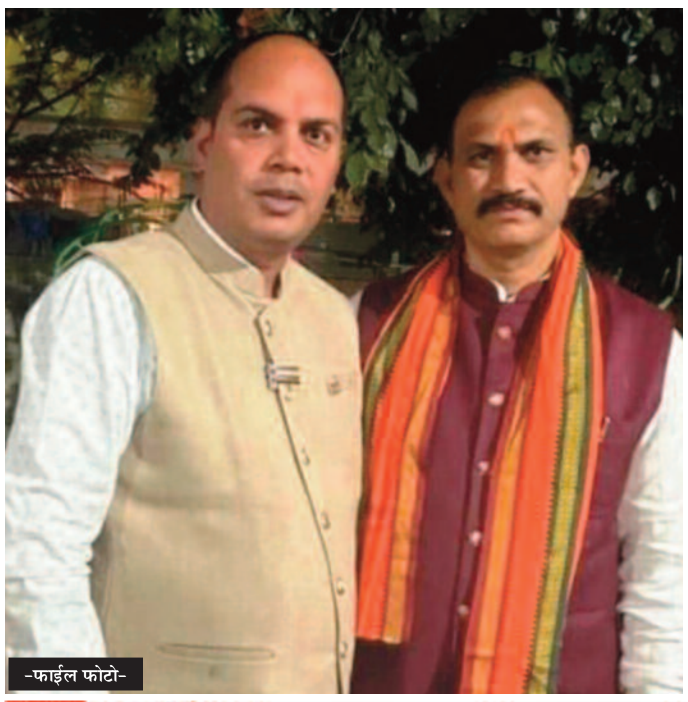
-फाईल फोटो-

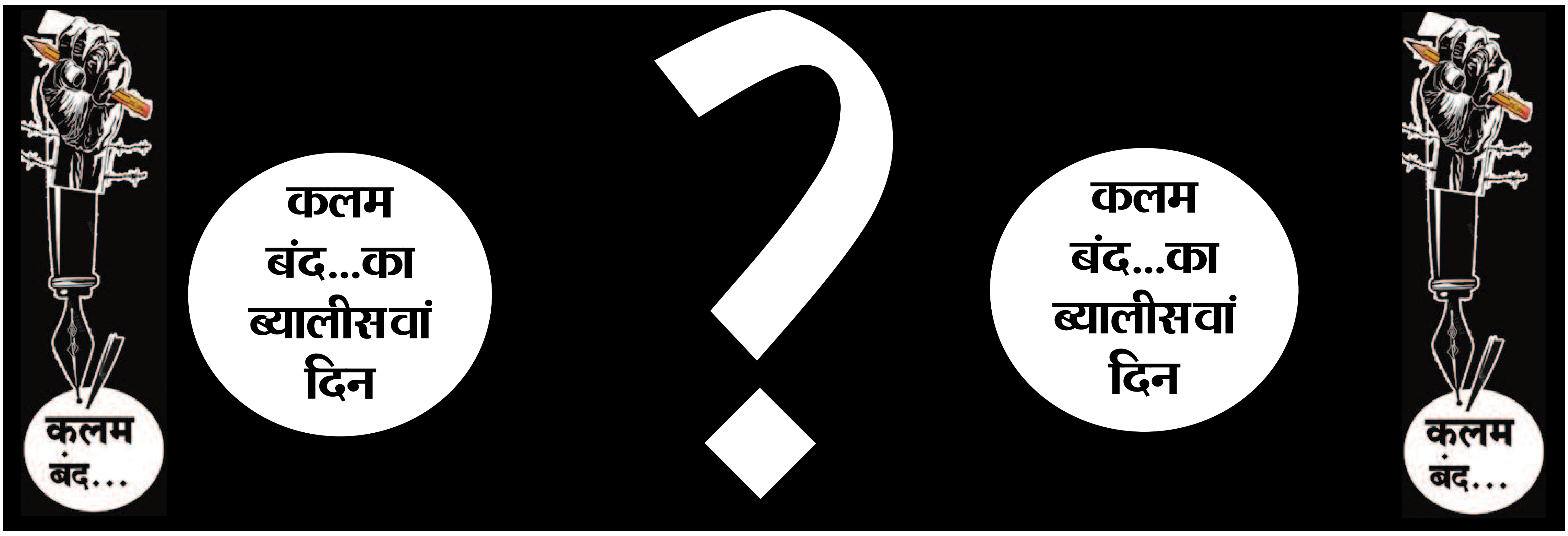

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है... संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

खुला पत्र

देश के माननीय प्रधानमंत्री से भी सवाल...क्या भ्रष्टाचार के विरुद्ध छत्तीसगढ़ की प्रदेश सरकार के खिलाफ समाचार लिखना है अपराध?

अम्बिकापुर,10 अगस्त 2024 (घटती-घटना)। माननीय मुख्यमंत्री से भी सवाल है...छत्तीसगढ़ में आपकी सरकार है...केंद्र में भी आपकी पार्टी की सरकार है...पर छत्तीसगढ़ में लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को कमियां दिखाने से रोकने का भी प्रयास हो रहा है...यह प्रयास कहीं ना कहीं स्वस्थ लोकतंत्र को कमजोर करने का प्रयास है...जहां पर भाजपा सरकार से लोगों को बेहतर करने की उम्मीद होती है तो वहीं पर छत्तीसगढ़ में नवनिर्वाचित मंत्री,विधायक बे-लगाम हो चुके हैं...उन्हें जो जिम्मेदारी मिली है उसे जिम्मेदारी को निभाने में असमर्थ दिख रहे हैं...उनकी कमियों को बताना उन्हें रास नहीं आ रहा इसलिए वह पत्रकार,संपादक का कलम बंद करने का प्रयास कर रहे हैं अब इस पर आप ही संज्ञान ले...और बताएं की संपादक व पत्रकार कौन सी खबर प्रकाशित करें?

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी?

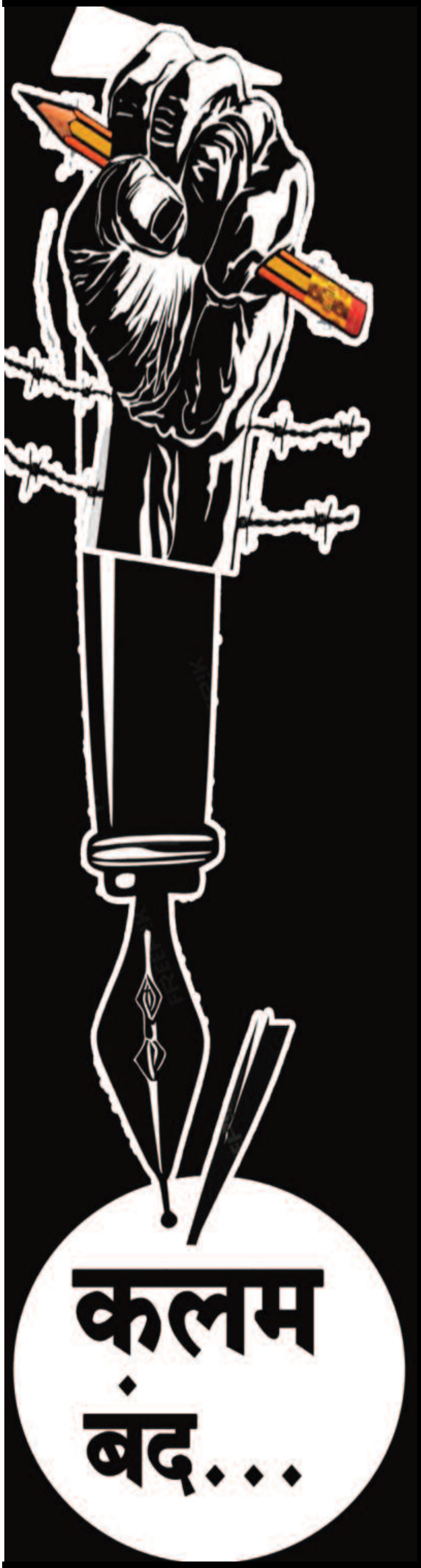

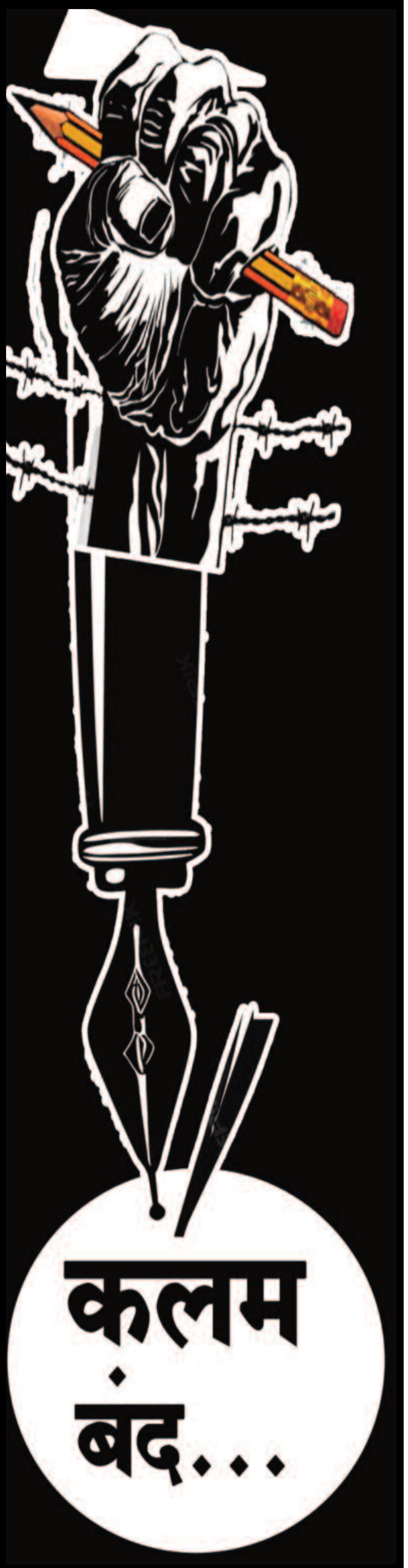

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

खुला पत्र

भारत में सच्चे पत्रकार को राजनीतिक पार्टियों से खतरा क्यों रहता है?

अम्बिकापुर,10 अगस्त 2024(घटती-घटना)। भारत अपने पत्रकारों को निडर होकर काम करने का स्वतंत्र तरीका प्रदान करने में बहुत पीछे है...इन दिनों...कुछ को छोड़कर...हर दूसरा पत्रकार वही खबर दे रहा है जो सरकार की प्रशंसा करती है...नए चैनल लोगों को सरकार द्वारा की गई गलती से विचलित करने के लिए विभिन्न विषयों पर अनावश्यक बहस दिखाएंगे...इसके कारण,अधिक महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जो किसी का ध्यान नहीं जाता हैं...दूसरा कारण यह है कि पत्रकार अपने सिद्धांतों और मूल्यों को खो रहे हैं क्योंकि आज स्थिति ऐसी है कि स्थापना के खिलाफ विषयों पर बोलने या लिखने वाले पत्रकारों को धमकी देना,गाली देना और मारना कई अन्य देशों की तरह भारत में भी एक वास्तविकता बन गई है...देश और दुनिया को डरा दिया है...वहीं,पत्रकारों पर लगातार हो रहे हमलों की घटनाओं ने एक बार फिर उन्हें सुर्खियों में ला दिया है...जो पत्रकार देश और उसके आम नागरिकों के लिए लिखे वे मरे या प्रताड़ित हुए सरकारी तंत्रों के द्वारा...!

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी?

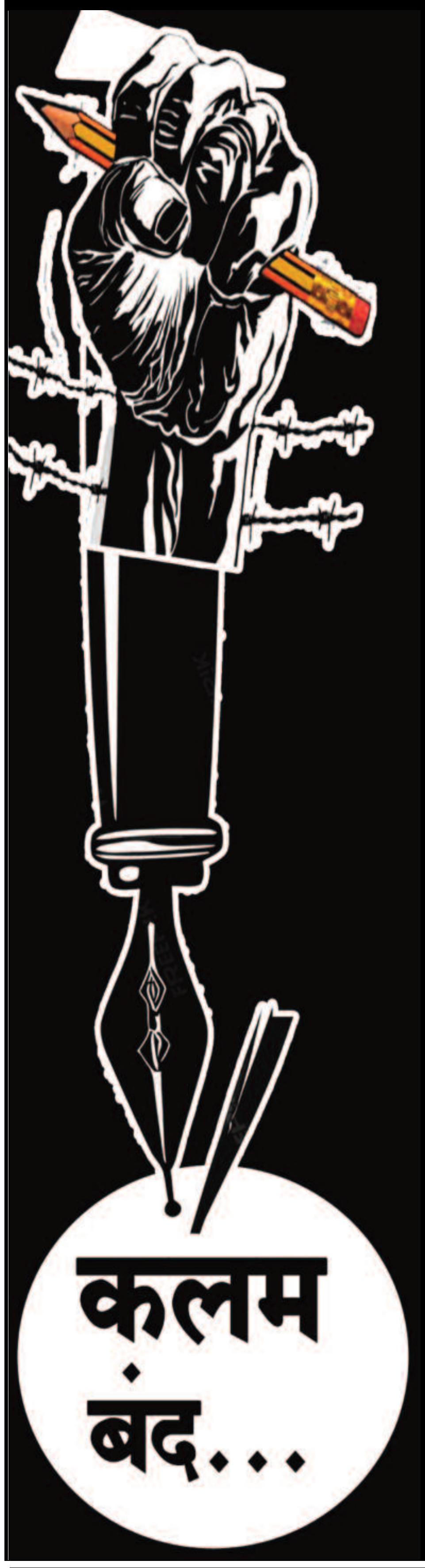

?

कलम बंद...का ब्यालीसवां दिन

कलम बंद...का ब्यालीसवां दिन

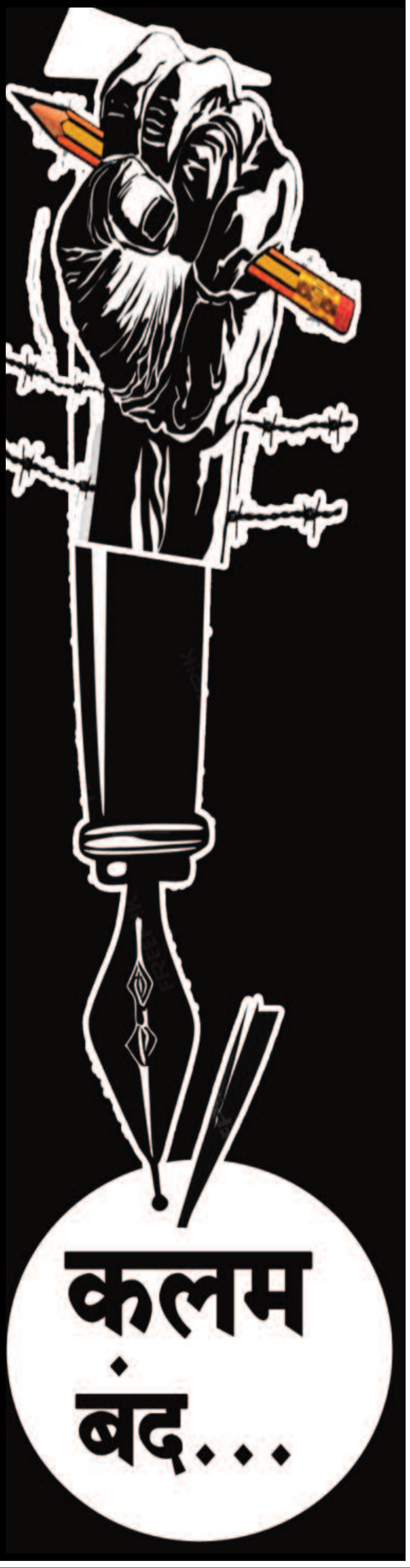

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

खुला पत्र

क्या भ्रष्टाचार का मामला वहीं होगा दर्ज जहां होगी भाजपा से इतर दल की सरकार ?

- भ्रष्टाचार की खबरों से दिक्कत...
- कमी दिखाओ तो दिक्कत...
- जनता की परेशानियों को दिखाओ तो दिक्कत...

अम्बिकापुर, 10 अगस्त 2024(घटती-घटना)। आखिर लोकतंत्र का चौथा स्तंभ करें तो क्या करें ? सरकारी तंत्र भ्रष्टाचार की ओर बढ़ रहे भ्रष्टाचार को उजागर करने पत्रकार दौड़ रहा पर पत्रकार की दौड़ के पीछे निर्वाचित जनप्रतिनिधि उसकी दौड़ की गति को कम करने का प्रयास कर रहे हैं,भ्रष्टाचार बढ़ता रहे पर पत्रकार ना दिखाएं क्या यही चाहता है जनप्रतिनिधि या फिर सरकारी तंत्र।

क्या छापें माननीय मुख्यमंत्री जी ?

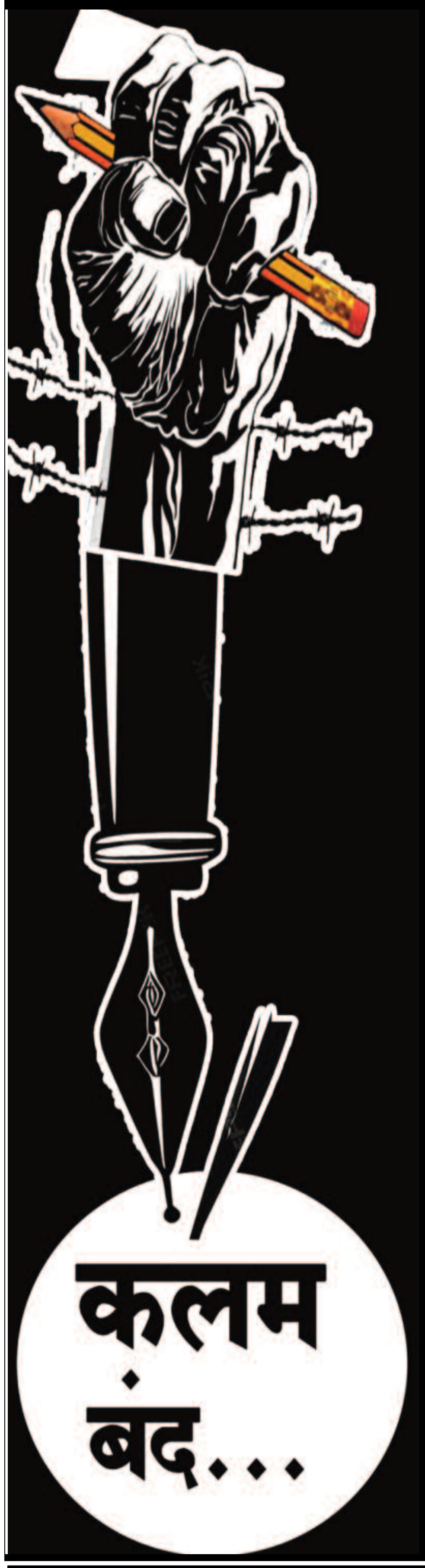

?

कलम बंद...का ब्यालीसवां दिन

कलम बंद...का ब्यालीसवां दिन

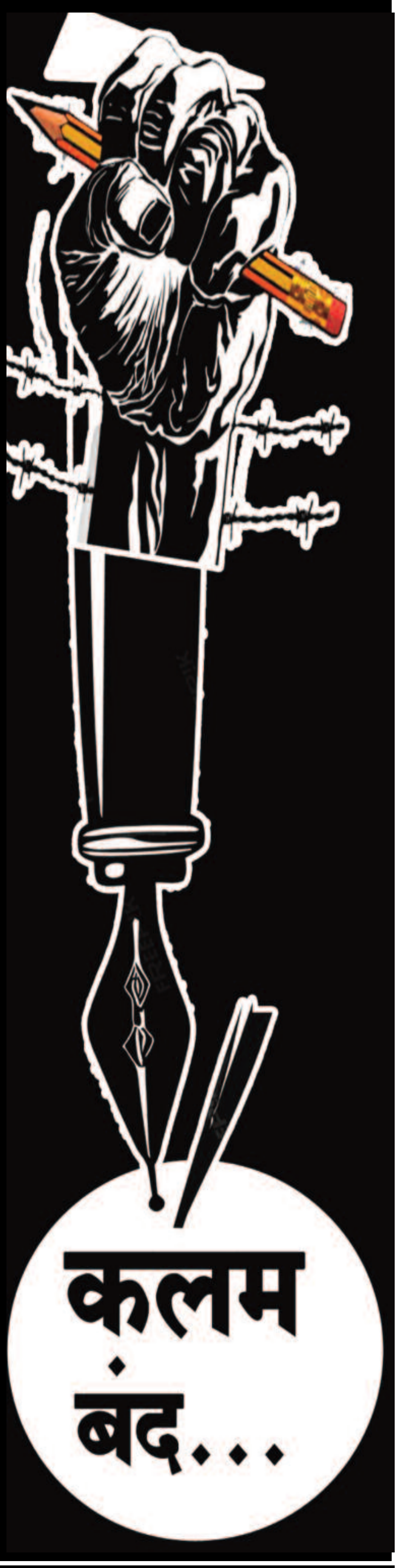

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

महिला टी 20 विश्व कप 2024 पर मंडराया खतरे का बादल

» अब बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने किया ये काम

ढाका, 10 अगस्त 2024। महिला टी20 वर्ल्ड कप 2024 का आयोजन बांग्लादेश की धरती पर होना है। इसके लिए आईसीसी पहले ही शेड्यूल जारी कर चुका है। पहला मुकाबला 3 अक्टूबर को खेला जाएगा। वहीं फाइनल मैच 20 अक्टूबर को होगा। लेकिन अब टी20 वर्ल्ड कप से पहले ही बांग्लादेश में चल रही हिंसा ने आईसीसी के सदस्यों को सोचने पर मजबूर कर दिया है। पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को हटाए जाने के बाद बांग्लादेश में बनी राजनीतिक अस्थिरता को देखते हुए बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने देश के सेवा प्रमुख से तीन से 20 अक्टूबर के बीच होने वाले महिला टी20 विश्व कप के आयोजन के लिए सुरक्षा का आश्वासन मांगा है।

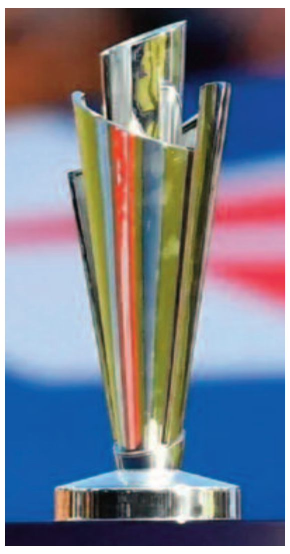

बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने किया ये काम

महिला टी 20 विश्व कप बांग्लादेश के दो शहरों सिलहट और मीरपुर में आयोजित किया जाएगा। टूर्नामेंट के अभ्यास मैच 27 सितंबर से शुरू हो जाएंगे। क्रिकबज के अनुसार, बीसीबी ने बांग्लादेश के सेना प्रमुख जनरल वेकर उज जमान को पत्र लिखकर टूर्नामेंट के आयोजन के लिए सुरक्षा आश्वासन मांगा है। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल भी बांग्लादेश की स्थिति पर नजर रखे हुए है जहां सरकार के खिलाफ हिंसक विरोध प्रदर्शनों में सैकड़ों लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी और शेख हसीना को अपना पद छोड़ना पड़ा।

आईसीसी समान समय क्षेत्र में इस टूर्नामेंट का आयोजन कर सकता है तथा ऐसे में उसके पास भारत, संयुक्त अरब अमीरात और श्रीलंका विकल्प होंगे। बीसीबी अंपायरिंग कमेटी के अध्यक्ष इफ्तिखार अहमद मिठू ने कहा कि हम टूर्नामेंट की मेजबानी करने की कोशिश कर रहे हैं। हमने आईसीसी महिला टी20 विश्व कप की सुरक्षा को लेकर आश्वासन मांगने के संबंध में गुरुवार को सेना प्रमुख को एक पत्र भेजा है क्योंकि हमारे पास अब केवल दो महीने का समय बचा है।

टी 20 वर्ल्ड कप 2024 में हिस्सा लेंगी 10 टीमें

टी 20 वर्ल्ड कप 2024 में कुल 10 टीमें हिस्सा लेंगी। टूर्नामेंट के सभी मुकाबले दो स्थानों पर खेले जाएंगे। इनमें ढाका के शेरे बांग्ला नेशनल क्रिकेट स्टेडियम और सिलहट इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम शामिल हैं। टूर्नामेंट में कुल 23 मैच होंगे। आईसीसी ने मई में ढाका में एक कार्यक्रम में टी20 वर्ल्ड कप 2024 के शेड्यूल को जारी किया था, जिसमें भारत की कप्तान हरमनप्रीत कौर और बांग्लादेश की कप्तान निगार सुल्ताना मौजूद थीं।

विनेश फोगाट के लिए अब रविचंद्रन अश्विन ने उठाई आवाज

पेरिस, 10 अगस्त 2024। पेरिस ओलंपिक 2024 में भारत को उस समय बड़ा झटका लगा जब महिला रेसलिंग के 50 किलोग्राम कैटेगिरी के गोल्ड मैच में पहुंचने के बाद रेसलर विनेश फोगाट को अयोग्य करार दे दिया गया। विनेश को डिसक्वालीफाई करने के पीछे का कारण उनका वजन तय सीमा से सिर्फ 100 ग्राम अधिक होना था। इस फैसले के आने के बाद हर भारतीय फैंस काफी निराश हुआ। वहीं भारतीय ओलंपिक संघ ने इस फैसले को लेकर कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन फॉर स्पोर्ट्स (छ्रस) यानी खेल पंचाट में भी अपील की है जिसके फैसले का इंतजार सभी काफी बेसब्री के साथ कर रहे हैं। वहीं अब विनेश के सपोर्ट में भारतीय क्रिकेट टीम के सदस्य रविचंद्रन अश्विन ने भी आवाज उठाई है।

रविचंद्रन अश्विन ने अपने यूट्यूब चैनल पर बात करते हुए कहा कि विनेश के साथ जो हुआ वह काफी दुखद है। ओलंपिक में हिस्सा लेना किसी भी एथलीट के लिए एक बड़ा अहम पल होता है। वे लगातार ओलंपिक में मेडल लाने का प्रयास कर रहीं थी और इस बार सफल भी हो गई थी। वह देश के लिए कई पदक पहले भी अलग-अलग इवेंट्स में जीत चुकी हैं। उन्हें काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा है। वहीं विनेश अब संन्यास भी ले चुकी हैं। विनेश के लिए ये काफी दिल तोड़ने वाला है।

अश्विन ने मेडल विजेताओं को भी दी शुभकामनाएं

ओलंपिक 2024 में भारत के लिए मेडल जीतने वाले एथलीट को भी अश्विन ने अपने इस यूट्यूब वीडियो में शुभकामनाएं दी। जिसमें उन्होंने कहा कि शूटिंग में इस बार हमने सबसे ज्यादा मेडल जीते हैं जो एक बड़ी उपलब्धि भी है। मनु भाकर, स्वप्निल कुसाले और सरबजोत तीनों का देश वापसी पर काफी जोरदार स्वागत भी हुआ। आपको ओलंपिक में मेडल जीतने के लिए थोड़ा भाग्य का भी सहारा चाहिए होता है। आपने कितनी भी कड़ी मेहनत क्यों ना की हो आपका भाग्य भी थोड़ा साथ होना चाहिए। इन सभी ने अपने दिन पर काफी शानदार प्रदर्शन किया।

रीतिका हुड्डा ने महिलाओं की 76 किग्रा फ्रीस्टाइल स्पर्धा के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया

पेरिस, 10 अगस्त 2024। भारतीय पहलवान रीतिका हुड्डा ने पेरिस ओलंपिक में महिलाओं की 76 किग्रा फ्रीस्टाइल स्पर्धा में 12-2 तकनीकी श्रेष्ठता के साथ क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। रीतिका ने मुकाबले में शानदार प्रदर्शन किया, आक्रामक खेल दिखाया और बर्नडेट को अपनी पकड़ में रखा। उसने अपनी प्रतिद्वंद्वी को गिरा दिया और दो अंक हासिल किए। आक्रामक स्थिति में रहते हुए रीतिका ने मौके का फायदा उठाया और इसे चार में बदल दिया। बर्नडेट ने रीतिका की जांघ को पकड़कर दो अंक लेने के लिए उसे नीचे गिरा दिया और वापसी करने की कोशिश की। हालांकि, वह रीतिका को पलटने में विफल रही और केवल दो अंक से संतुष्ट हो गई। रीतिका ने बर्नडेट को नीचे गिराने के लिए आक्रामक तरीके से जवाबी हमला किया और 6-2 की बढ़त हासिल कर ली। उसने बर्नडेट के पेट को पकड़कर लगातार अंक अर्जित किए, जिससे हंगरी के पहलवान को उसकी पीठ पर फेंक दिया गया। उसने अंतिम दो अंक लेकर ताबूत में अंतिम कील ठोक दी और तकनीकी श्रेष्ठता के आधार पर 12-2 से जीत दर्ज करके अगले दौर में प्रवेश किया।

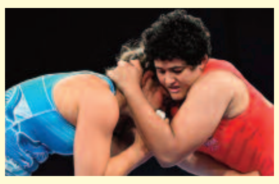

जेंडर विवाद के बीच ओलंपिक चैंपियन बनी ये बॉक्सर

» बायोलॉजिकल मेल होने लगा था आरोप

पेरिस, 10 अगस्त 2024। पेरिस ओलंपिक 2024 में महिला बॉक्सिंग इवेंट काफी विवादों में रहा। ये विवाद तब खड़ा हुआ जब महिलाओं की वेल्टरवेट कैटेगिरी के प्री-क्वार्टर फाइनल में इटली की बॉक्सर एंजेला कारिनी और अल्जीरिया की बॉक्सर इमान खलीफ के बीच टक्कर हुई। आरोप लगाया गया कि एक महिला बॉक्सर का मुकाबला एक पुरुष मुक्केबाज से कराया गया है। अल्जीरिया की बॉक्सर इमान खलीफ पहले भी जेंडर को लेकर विवादों में रही हैं। इमान खलीफ को 2023 बॉक्सिंग वर्ल्ड चैंपियनशिप के गोल्ड मेडल मैच से कुछ घंटे पहले जेंडर को लेकर अयोग्य घोषित करार दिया गया था लेकिन इस सब विवादों के बीच वह ओलंपिक में गोल्ड मेडल जीतने में कामयाब रही हैं।

जेंडर विवाद के बीच जीता गोल्ड

अल्जीरिया की महिला बॉक्सर इमान खलीफ ने वुमेंस 66 किलोग्राम भार वर्ग में गोल्ड अपने नाम किया। इमान ने चीन की यांग लियू के खिलाफ फाइनल मुकाबले में गोल्ड मेडल जीता। इमान खलीफ ने फाइनल में भी एकतरफा जीत हासिल की। गोल्ड मेडल के लिए खेले गए फाइनल में इमान ने चीन की यांग लियू को 5-0 से हराया। इमान खलीफ गोल्ड मेडल जीतने वाली अल्जीरिया की पहली महिला बॉक्सर हैं। उनके अलावा केवल होसीन सोलटानी ने पुरुष कैटेगरी में अल्जीरिया के लिए गोल्ड मेडल जीता है।इमान खलीफ के लिए पेरिस ओलंपिक का सफर बेहद मुश्किल भरा रहा है। पूरे ओलंपिक के दौरान उन्हें पुरुष बताकर जमकर ट्रोल किया गया। इन सभी चीजों को सहते हुए खलीफ अपने मुकाबलों पर ध्यान देती रहीं। खलीफ ने जीत के बाद हवा में पंच मारा और अल्जीरिया के झंडे के साथ विक्ट्री लैप लगाते हुए सभी को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद कहा। इस दौरान वो काफी इमोशनल दिखीं।

गोल्ड मेडल जीतने के बाद क्या बोलीं इमान खलीफ?

इमान खलीफ की उम्र 25 साल है। फाइनल मुकाबले के बाद बातचीत करते हुए महिला मुक्केबाज ने कहा, %पिछले 8 सालों से मेरा सपना रहा है और अब मैं ओलंपिक चैंपियन और गोल्ड विजेता हूं। खलीफ ने एक ट्रांसलेटर के माध्यम से संवाददाताओं के सवाल का जवाब देते हुए कहा जो हाल ही में उनके लिंग विवाद को लेकर उत्पन्न हुआ था, %उन हमलों के बाद मेरी यह सफलता और शुकून देता है। हम एक एथलीट के रूप में प्रदर्शन करने के लिए ओलंपिक में मौजूद हैं और मुझे आशा है कि भविष्य में हम ओलंपिक में इस तरह के हमले नहीं देखेंगे।

अमन सहरावत ने जीता ब्रॉन्ज मेडल

पेरिस, 10 अगस्त 2024। अमन सहरावत...आज इस नाम से भारत का हर शख्स रूबरू है। भारत के नए स्टार और सिर्फ 21 साल की उम्र में ओलंपिक में ब्रॉन्ज मेडल जीतना आसान काम नहीं होता। ऐसा करने के लिए आपके अंदर क्षमता होनी चाहिए जिसके लिए आप हर वो चीज त्याग सकते हैं जो आपको पसंद हो। घर से लेकर अपनी हर वो प्यारी चीज जो आपको कम्फर्ट देती हो। अमन सहरावत ने ऐसा किया। यही कारण है कि वह भारत के लिए ओलंपिक मेडल जीतने वाले सबसे कम उम्र के एथलीट बने हैं। अमन की कहानी इसलिए भी बेहद खास है क्योंकि उन्होंने सिर्फ 11 साल की उम्र में अपने माता और पिता दोनों को खो दिया था। एक ऐसी उम्र जहां किसी को अपने आने वाले कल का होश नहीं रहता, लेकिन इन तमाम चुनौतियों के बाद भी उनके कड़े हौसलों ने आज उन्हें इस मुकाम तक पहुंचा दिया।

चेन्नईयिन एफसी असम राइफल्स के खिलाफ अभियान को सकारात्मक रूप से समाप्त करना चाहते है

जमशेदपुर, 10अगस्त 2024। चेन्नईयिन एफसी (सीएफसी) रविवार को जमशेदपुर के जेआरडी टाटा स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में असम राइफल्स एफटी के खिलाफ अपने डूरंड कप 2024 अभियान को सकारात्मक रूप से समाप्त करने का लक्ष्य बना रहा है। नए चेहरे वाली मरीना माचांस, जिन्होंने मुख्य रूप से युवा भारतीय खिलाड़ियों की एक टीम को मैदान में उतारा था, अपने पहले दो ग्रुप मैचों में भारतीय सेना एफटी और जमशेदपुर एफसी से हार गई, हालांकि उन्होंने कड़ी टक्कर दी। हालांकि असम राइफल्स ने भी अपने पिछले दो गेम गंवाए, लेकिन सहायक कोच नोएल विल्सन उनके द्वारा उत्पन्न खतरे से सावधान हैं।

असम राइफल्स एक अच्छी टीम है, डिफेंसिव रूप से मजबूत है। अपने पिछले दो गेम हारने के बावजूद उन्होंने काम करना जारी रखा है। वे एक कठिन टीम हैं, लेकिन उनके प्रति पूरे सम्मान के साथ, हमें, चेन्नईयिन एफसी के रूप में, मैदान पर जाना होगा और अपना खेल खेलना होगा और गेम जीतने के लिए जो करना है, वो करना होगा, विल्सन ने सीएफसी रिलीज के अनुसार कहा। विंसी बैरेटो ने जमशेदपुर एफसी के खिलाफ प्रतियोगिता में दूर से एक शानदार प्रयास के साथ टीम का पहला गोल किया। युवा भारतीय, सोलामलाई आर और विशाल आर जैसे खिलाड़ियों के साथ, डूरंड कप में चेन्नईयिन के उज्ज्वल खिलाड़ियों में से एक रहे हैं, जिसने विल्सन के अनुसार, बहुत सारे सकारात्मक परिणाम दिए हैं। विल्सन ने कहा, रिजर्व टीम के खिलाड़ियों को सीनियर खिलाड़ियों से मुकाबला करने की कोशिश करते देखना सकारात्मक पहलू रहा है। आप युवा खिलाड़ियों को पहली टीम के खिलाड़ियों के साथ खेलते हुए देखते हैं और आपको अच्छा महसूस होता है। खासकर जमशेदपुर के खिलाफ पिछले मैच में, मुझे लगा कि हर खिलाड़ी ने मैदान पर कड़ी मेहनत की। हर खिलाड़ी ने संघर्ष किया। इसलिए मैं हमेशा रिजर्व खिलाड़ियों से कहता हूं कि उन्हें कड़ी मेहनत करते रहना है और उन्हें प्रशिक्षण और मैच के दौरान यह साबित करते रहना है कि उनमें सीनियर टीम में फिट होने की योग्यता है। अगर दो या तीन खिलाड़ी भी ऐसा कर पाते हैं, तो यह एक बड़ी सफलता है।

आनंद महिंद्रा ने की 99 वर्षीय तैराक की तारीफ

पेरिस, 10 अगस्त 2024। आनंद महिंद्रा ने 99 वर्षीय तैराक बेट्टी ब्रसेल की सराहना की और उनकी तुलना पेरिस कॉम्पारिजन पेरिस ओलंपिक 2024 में भाग लेने वाले युवा खिलाड़ियो से की। हमें पेरिस में युवा, शक्तिशाली खिलाड़ियों को प्रतिस्पर्धा करते हुए देखने में मज़ा आया। लेकिन यहाँ 99 वर्ष की उम्र में बेट्टी ब्रूसेल हैं। इसलिए जैसे-जैसे पेरिस में खेल समाप्त हो रहे हैं, यह क्लिप हमें याद दिलाती है कि आजीवन 'ओलंपिक मनःस्थिति' रखना अधिक शक्तिशाली हैं। महिंद्रा ने एक्स पर पोस्ट किया। गार्डियन की एक रिपोर्ट के अनुसार, बेट्टी ब्रूसेल का जन्म 1924 में हॉलैंड में हुआ था और उन्होंने एम्स्टर्डम के पास नहरों में अपने भाई-बहनों के साथ तैराकी सीखना शुरू किया। ब्रसेल 1959 में अपने पति गेरिट के साथ कनाडा चली गई, ग्रैंड फोर्क्स शहर के बाहर कनाडा चली गई। रिपोर्ट में कहा गया है कि ब्रसेल ने अपनी प्रतिस्पर्धी तैराकी यात्रा साठ के दशक के मध्य में शुरू की, जब उन्होंने ब्रिटिश कोलंबिया सीनियर गेम्स में भाग लिया। रिपोर्ट में कहा गया है कि उनके कोच स्टेनली विल्सन ने उनकी सराहना की और कहा कि ब्रसेल की अटूट ऊर्जा दूसरों के लिए प्रेरणा बन गई है।

मनसुख मंडाविया ने शानदार प्रदर्शन के लिए भारतीय पुरुष हॉकी टीम को सम्मानित किया

नई दिल्ली, 10 अगस्त 2024। केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री मनसुख मंडाविया ने शनिवार को नई दिल्ली में पेरिस 2024 ओलंपिक में कांस्य पदक हासिल करने में उनकी उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए भारतीय हॉकी टीम को सम्मानित किया। पेरिस ओलंपिक में पुरुष हॉकी में कांस्य पदक जीतने के बाद, भारतीय पुरुष हॉकी टीम शनिवार सुबह नई दिल्ली हवाई अड्डे पर पहुँची। मंडाविया ने टीम के समर्पण और कड़ी मेहनत की सराहना की, और कहा कि वैश्विक मंच पर उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन ने पूरे देश को गौरवान्वित किया है।

पूरे देश को आपकी उपलब्धि पर गर्व है। यह जीत आपकी दृढ़ता, टीम वर्क और अदम्य भावना का प्रमाण है। आपने भारत को अपार गौरव दिलाया है और लाखों युवा एथलीटों को अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित किया है,÷ पीआईबी प्रेस विज्ञप्ति के हवाले से मंडाविया ने कहा। केंद्रीय मंत्री ने कोचिंग स्टाफ और सहयोगी टीम के अथक प्रयासों की भी सराहना की और टीम की सफलता में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को पहचाना। उन्होंने भारत में हॉकी को और विकसित करने और देश की खेल प्रतिभाओं को निखारने के लिए सभी आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई। हॉकी हमारे लिए सिर्फ एक खेल से बढ़कर है।यह हमारे राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। टीम द्वारा दिखाई गई कड़ी मेहनत, प्रतिबद्धता और जुनून ने इस ऐतिहासिक सफलता को जन्म दिया है। आपने दुनिया को दिखाया है कि दृढ़ संकल्प और दृढ़ संकल्प के साथ क्या हासिल किया जा सकता है, मंडाविया ने जोर दिया। भारत की हॉकी टीम आज पेरिस ओलंपिक से कांस्य पदक जीतकर लौटी है। मैंने सभी से मुलाकात की और सभी खिलाड़ियों को बधाई दी। पूरा देश गौरवान्वित महसूस कर रहा है...।

न्यायालय नजूल अधिकारी, अम्बिकापुर जिला-सरगुजा

रा0प्र0क्रं0- /अ-6/2023-24

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक मो0 इमरान कुरैशी आ0 स्व0 अब्दुल जब्बार कुरैशी एवं साजिया कुरैशी पत्नी स्व0 इरफान कुरैशी एवं अन्य-3 सभी निवासी गुरूद्वारा वार्ड नम्बर-36 मोहल्ला मायापुर अम्बिकापुर पोस्ट ऑफिस अम्बिकापुर थाना व तहसील अम्बिकापुर जिला-सरगुजा छ0ग0 के द्वारा मोहल्ला नगर अम्बिकापुर शीट नम्बर-4 स्थित नजूल प्लाट नम्बर 2387/8, 2388/11, 2387/10, 2388/13, 2388/14 में से रकबा 508,88, 70, 220, 218 वर्गफीट भूमि के नजूल अभिलेखों से हक त्याग पत्र बिलेख दिनांक 10.06.2024 के अनुसार अनावेदक सहानी खातून पुत्री स्व0 अब्दुल जब्बार कुरैशी पत्नी सज्जाद आलम निवासी ग्राम नेवरी थाना सदर थाना नम्बर-45 रांची पोस्ट ऑफिस रांची जिला रांची झारखण्ड का नाम विलोपित किए जाने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है।

उक्त भू-खण्ड के संबंध में यदि किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई दावा अथवा आपत्ति प्रस्तुत करना हो तो अपना लिखित दावा-आपत्ति स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक-28/08/2024 तक इस न्यायालय में प्रस्तुत कर सकते हैं। नियत समय-सीमा के बाद प्राप्त दावा-आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक 22/07/2024 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालीन पदमुद्रा से जारी।

सील | नजूल अधिकारी अम्बिकापुर

समझौता एक्सप्रेस की कहानी सुन बरस पड़े थे अमिताभ बच्चन

अभिषेक बच्चन ने 24 साल पहले फिल्म रिफ्यूजी से अपने करियर की शुरुआत की थी। हालांकि, अभिषेक ने अपनी फिल्मों के लिए मेहनत में कोई कसर नहीं छोड़ी और इसी के साथ उनपर हमेशा एक प्रेशर भी रहा और वो था अमिताभ बच्चन के बेटे होने का। ये कहानी है अभिषेक की उस फिल्म की जो डेब्यू फिल्म बनते-बनते रह गई। दरअसल डायरेक्टर राकेश ओमप्रकाश मेहरा की फिल्म समझौता एक्सप्रेस से अभिषेक बॉलीवुड में कदम रखने वाले थे, लेकिन ऐसा हो न सका। आपको जानकर हैरानी होगी कि फाइनली डायरेक्टर ने वो स्क्रिप्ट ही जला डाली। राकेश ओमप्रकाश मेहरा ने हाल ही में शिव तलवार के यूट्यूब चैनल पर इस फिल्म को लेकर पूरी कहानी सुनाई। उनकी पहली फिल्म समझौता एक्सप्रेस से अभिषेक डेब्यू करने वाले थे, लेकिन इससे पहले कि इसकी शूटिंग शुरू होती ये बंद हो गई। उन्होंने बताया कि इंडस्ट्री को लगा था समझौता एक्सप्रेस में जो कहानी लिखी है, वो आग से खेलने वाला काम साबित हो सकती है। इस फिल्म में अभिषेक बच्चन को एक पाकिस्तानी आतंकवादी का किरदार निभाना था।

फिल्म समझौता एक्सप्रेसकी कहानी राकेश ने कमलेश पांडे के साथ लिखी थी और ये अभिषेक के साथ उनकी पहली फिल्म होनेवाली थी। उन्होंने बताया कि इस फिल्म पर उन्होंने पिछले एक साल से काम किया। उन्होंने बताया कि अभिषेक एक डायरी रखते थे और वो अपने किरदार के बारे में पॉइंट्स नोट किया करते थे।

उन्होंने बताया कि उनकी इस फिल्म में अभिषेक के किरदार के मन में भारत के लिए खूब नफरत थी। दरअसल इस कहानी में उनके पिता को आतकंवाद के झूठे आरोप में फंसाया जाता है और फिर वो अपने पिता को जेल से छुड़ाने के लिए भारत में घुसता है। फिर वह एक पुलिस ऑफिसर का दोस्त बन जाता है, जो अंत में उसे मार देता है, इसके बाद उसकी लाश समझौता एक्सप्रेस में मिलती है।

फिल्म गुंडा करके बहुत पछताए थे मुकेश ऋषि

कुंदन शाह की फिल्म गुंडा को बी-ग्रेड फिल्मों में गिना जाता है। इस फिल्म की भाषा और कुछ डायलॉग्स की खूब आलोचना भी हुई थी। पर फिल्म में मुकेश ऋषि द्वारा बोला गया डायलॉग मेरा नाम है बुल्ला, रखता हूं खुल्ला, बहुत हिट हुआ था। आज भी यह डायलॉग खूब चर्चा में रहता है। लेकिन मुकेश ऋषि इस फिल्म को साइन करके पछता रहे थे, जिसका खुलासा उन्होंने अब एक इंटरव्यू में किया है। मुकेश ऋषि ने यह भी बताया कि सैफ अली खान ने उन्हें बताया था कि गुंडा किस कदर कल्ट फिल्म बन गई है। वरना, तो उन्हें इसका आभास भी नहीं था। मुकेश ऋषि को हैरानी होती है कि 26 साल बाद भी लोग गुंडा, उनके किरदार और डायलॉग की बातें करते हैं।साल 1998 में रिलीज हुई गुंडा में मिथुन चक्रवर्ती लीड रोल में थे, और फिल्म में मुकेश ऋषि ने बुल्ला नाम के विलेन का रोल प्ले किया था। इस फिल्म के डायलॉग्स पर आज भी खूब मीम बनते हैं और वीडियो क्लिप्स पर वायरल होते रहते हैं।

मुकेश ऋषि ने हिंदी रश को दिए इंटरव्यू में कहा, जब मुझे गुंडा में विलेन की भूमिका निभाने का प्रस्ताव मिला, तो मैंने इसके बारे में ज्यादा नहीं सोचा। मैं तब इंडस्ट्री में नया विलेन बनकर उभरा था। वो मुझे अच्छे पैसे भी दे रहे थे। लेकिन, जब शूटिंग शुरू हुई तो मुझे अपने फैसले पर पछतावा हुआ। मुझे फिल्म की भाषा के कारण पछतावा हो रहा था। फिल्म में हर कोई, चाहे वह शक्ति कपूर हों, या मोहन जोशी, वो सभी एक ही स्वर और भाषा में बात कर रहे थे, इसलिए मुझे भी ऐसा करना पड़ा। मुकेश ऋषि ने आगे कहा, कांति शाह ऐसी फिल्में बनाने के लिए जाने जाते थे। गुंडा को दर्शकों ने खूब पसंद भी किया था। ऐसा नहीं था कि ये फिल्में फ्लॉप थीं। लेकिन, इन फिल्मों को मुख्यधारा का सिनेमा नहीं माना गया। यहां तक कि शक्ति कपूर ने भी इस फिल्म को बनाने के मेरे फैसले पर सवाल उठाया। मुकेश ऋषि ने कहा कि उन्हें हैरानी होती कि इंटरनेट की दुनिया में 26 साल बाद भी गुंडा की चर्चा होती है। उन्हें इस फिल्म की पॉपुलैरिटी के बारे में सैफ अली खान ने बताया था। मुकेश ऋषि बोले, सैफ ने मुझसे कहा था कि तुम्हारी फिल्म सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। मैंने पूछा कि कौन सी, तो उन्होंने जवाब दिया गुंडा। उस वक्त मैं यह सोचकर डरता था कि ऐसे रोल में मुझे देखकर लोग मेरे बारे में क्या सोचेंगे, लेकिन आज की पीढ़ी को उसमें ह्यूमर नजर आता है। मुझे इस फिल्म के डायलॉग रिपीट करने में झिझक होती थी, और आज की पीढ़ी ने लोगों का फिल्म देखने का नजरिया बदल दिया है। उन्हें इसमें एक पॉजिटिव चीज मिली है। मेरी खुद की बेटी कहती है- बुल्ला, बुल्ला क्या कर रहा है?

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि हमारी मे0 रोइत्रा मॉईकन कंपनी 4IG-88 हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी अम्बिकापुर सरगुजा छत्तीसगढ़ के नाम से संचालित है जिसका फर्म पंजीयन क्रमांक-222201967485 है जो कि 25/05/2019 को पंजीयत है। उक्त फर्म में 7 पार्टनर थे। 1.सुभाष सिंह 2.प्रशांत रंजन सिन्हा 3.शोभित कुमार सिंह 4.प्रशांत जायसवाल 5. प्रियंका सिंह 6.शिखा वर्मा 7. रणधीर कुमार सिंह।

दिनांक 10/08/2024 से फर्म के साझेदारी में संशोधन किया गया है। फर्म में सुभाष सिंह एवं प्रशांत रंजन सिन्हा को छोड़कर बाकी सभी पार्टनरों को निष्कासित किया जाता है। उक्त संशोधन के पश्चात फर्म में पार्टनरों की संख्या 2 हो गई है।

भागीदार
रोइत्रा मॉइकन कंपनी
अम्बिकापुर (छ0ग0)

खुला पत्र

तुगलकी फरमान के विरूद्ध कलमबंद अभियान

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के विभाग जनसंपर्क के द्वारा स्वास्थ्य मंत्री श्री श्यामबिहारी जायसवाल के विभाग के संबंधित समाचारों के प्रकाशन पर जनसंपर्क संचनालय के आयुक्त सह संचालक आईपीएस श्री मयंक श्रीवास्तव के मौखिक आदेश पर घटती-घटना के शासकीय विज्ञापन पर रोक लगाकर दबाव बनाने से लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के मूलभूत हक पर कुठाराघात के विरूद्ध कलमबंद अभियान...के पन्द्रहवें दिन भी केंद्र सरकार से अनुमोदित विज्ञापन नियमावली के आदेश को ठेंगा दिखाने वाले जनसंपर्क विभाग के द्वारा कोई प्रतिक्रिया नहीं देने के पीछे किसका हाथ...

क्या छापें स्वास्थ्य मंत्री जी ?

क्या छापें आयुक्त सहसंचालक आईपीएस मयंक श्रीवास्तव जी ?

छत्तीसगढ़ सरकार घर तोड़िए या कार्यालय तोड़िए...इंकलाब होता रहेगा इंसाफ तक...

अब तो बताईए मुख्यमंत्री जी...क्या छापें ?

क्यूं न लिखें सच ?

माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय जी 25 जून को संविधान हत्या दिवस छत्तीसगढ़ में नहीं मनाया जायेगा क्या?

इमरजेंसी पर बात...हर बात पर आरोप...तो छत्तीसगढ़ में एक आईपीएस के तुगलकी फरमान पर आदिवासी अंचल से विगत 20 वर्षों से प्रकाशित अखबार पर क्यों किया जा रहा है जुर्म...?

क्यों कलमबंद आंदोलन के लिए विवश होना पड़ा एक दैनिक अखबार को...?

घटती-घटना के स्नेही पाठकों,विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिंतकों को हो रही असुविधा के लिए खेद है...

संपादक :- अविनाश कुमार सिंह

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा साईं ऑफसेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)